M.V. Arunachalam

(Late) Shri M.V. Arunachalam was one of the leading personalities of India, who made his mark in the fields of business and community service, leaving a lasting impression for others to benefit from and to look up to.

M.V. Arunachalam was born on 19 July 1929 in Pallathur village of Tamil Nadu in a family of Nattukottai Chettiars. His great-grandfather Dewan Bahadur AM Murugappa Chettiar, father Shri AMM Vellayan Chettiar, uncles AMM Murugappa Chettiar and AMM Arunachalam Chettiar inspired young M. V. Arunachalam to follow them into the twin streams of business and community service. He completed his formal education in Madras (later renamed as Chennai), and obtained a B.Sc. (Geology) degree from the Presidency College in 1948.

M.V. Arunachalam was inducted into the industrial activity of the family, initially into the exports business of which iron ore was a major portion. Gradually he went on to take up additional roles and responsibilities in the Group, guiding each business to make significant contributions to the Indian middle-class and the Indian Economy that was emerging and finding its own shape. Under his stewardship as the Chief Executive Officer, the Murugappa Group grew in size and stature, reaching a turnover of Rs 1800 crores in April 1995. Thanks to his guidance and nurturing of leadership, the Murugappa Group is now one of the largest conglomerates in India, spread over 6 continents and with a turnover of INR 24300 Crores. He also made his mark in a wide variety of institutions, industry bodies and regulatory authorities, leaving a lasting impression on each one of them.

At different times in his long and distinguished career, M.V. Arunachalam grew the dimensions of the industrial activity of Murugappa Group, and hence its contribution to Indian Economy. He also took up important business positions of Director Carborundum Universal, Chairman TI Diamond Chains Ltd, MD TII – later CMD, Chairman EID Parry India Ltd, Director Coromandel Fertilisers Ltd and CEO Murugappa Group of Companies.

His specific contribution to the recovery and successful turnaround of India's second-oldest company EID Parry (India) Ltd is legendary. The Murugappa Group took over the company in 1981 with Shri M.V. Arunachalam as the Chairman, and within a brief period of three years brought it back not only to the levels of business stability, but also generating dividends. The company recently celebrated its 225th year of being one of the most significant contributors to India's sugar industry.

M.V. Arunachalam served on the Boards of various companies across industry sectors, leaving his indelible mark over their future growth paths. An active player in the proceedings of industry forums and community forums, he rose to be the Head of South India Chamber of Commerce in the year 1964-65. He also headed Madras Management Association in the same year, and served as the Head of Madras Productivity Council. He became the Governor of Rotary Club covering Tamil Nadu, Kerala and Sri Lanka, even before he was 40 years of age.

As a natural progression, his contributions moved on to the national arena. He was the President of Indian National Committee of International Chamber of Commerce (ICC) in the early 1970s. He also served as Vice Chairman of Commission on International Trade and Investment Policy, one of the flagship commissions of the Paris-based International Chamber of Commerce. M.V. Arunachalam joined the committee of Federation of India Chamber of Commerce and Industry (FICCI) in 1965, and chaired the Golden Jubilee Session in 1976-77.

He served as the Chairman of Neyveli Lignite Corporation for the period 1969-70, as a Trustee of Unit Trust of India from 1971 to 1976, as Chairman of Madras Fertilizers Limited (1977-78) and Tamil Nadu Industrial Investment Corporation (1981-86). He was also a Member of the Board of Reserve Bank of India from 1977 to 1994, possibly a record tenure of 17 years. He also served on the Board of Industrial Credit and Investment Corporation of India (ICICI) for a dozen years.

M.V. Arunachalam was active in the Joint Business Councils (JBCs) which was started in 1966 with the formation of the first India-Japan and Japan-India Business Cooperation Committee with FICCI and the Japan Chambers of Commerce and Industry being the respective partners. For his contributions to the development of industrial activity, he was awarded The Order of the Sacred Treasure, Gold and Silver Star by the Emperor of Japan in 1996.

His contributions to the field of education came across in his responsibilities as Chairman of Governing Council of Central Electro-Chemical Research Institute, Karaikudi (1970-72), Member of Governing Body of Indian Institute of Management Ahmedabad (IIM-A) and Anna University Syndicate at Madras. He has been a member of Executive Committee of Kalakshetra, a leading organization in preservation and promotion of Fine Arts. He also served as Chairman of Madras Kendra of Bhartiya Vidya Bhavan.

The bright light that was the constant source of energy to industry, community and society at large, went off into the horizon on 04 September 1996. The rich tributes paid by his contemporaries, from across Industry, Government and society at large, bear testimony to the great impact created by him on all.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on M.V. Arunachalam.

Credits:

Text : Based on the information received from proponent

Stamp/ FDC/ Brochure : Smt. Alka Sharma

Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts
India

एम. वी. अरुणाचलम
M. V. ARUNACHALAM

विवरणिका BROCHURE

एम.वी. अरुणाचलम

(स्व.) श्री एम.वी. अरुणाचलम भारत के उन अग्रणी व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने व्यवसाय और समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और जनमानस के पटल पर गहरी छाप छोड़ गए।

एम.वी. अरुणाचलम का जन्म 19 जुलाई 1929 में तमिलनाडु के पल्लातुर गांव के नाट्टुकोट्टै चेट्टियार परिवार में हुआ था। उनके परदादा दीवान बहादुर ए एम मुरुगप्पा चेट्टियार, उनके पिता ए एम एम वेल्लयन चेट्टियार तथा उनके चाचा ए एम एम मुरुगप्पा चेट्टियार तथा ए एम एम अरुणाचलम चेट्टियार ने युवा एम. वी. अरुणाचलम को व्यवसाय और समाज सेवा दोनों क्षेत्रों में उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपनी औपचारिक शिक्षा मद्रास (नया नाम चेन्नई) में पूरी की तथा 1948 में प्रेसिडेंसी कॉलेज से बी.एस.सी. (भूगर्भ शास्त्र) की डिग्री प्राप्त की।

एम.वी. अरुणाचलम को परिवार की औद्योगिक गतिविधि में शामिल किया गया। उनकी शुरुआत निर्यात के व्यवसाय से हुई जिसका बड़ा हिस्सा लौह अयस्क का था। धीरे धीरे उन्होंने समूह में अतिरिक्त भूमिकाएं और जिम्मेदारियां उठाई। प्रत्येक व्यवसाय को मार्गदर्शन दिया और उभरते और आकार ले रहे भारतीय मध्यम वर्ग तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में उनके नेतृत्व में मुरुगप्पा समूह का आकार और रुतबा बढ़ा और अप्रैल 1995 में समूह का टर्न ओवर 1800 करोड़ रुपए पहुंच गया। एम.वी. अरुणाचलम से मिले मार्गदर्शन तथा उनके द्वारा तैयार किए गये नेतृत्व के बदौलत वर्तमान में मुरुगप्पा ग्रुप भारत के सबसे बड़े संगठनों में से एक है जो छह महाद्वीपों में फैला है तथा आज इसका टर्न ओवर 24300 करोड़ रुपए हैं। उन्होंने विभिन्न प्रकार के संस्थानों, औद्योगिक संस्थाओं तथा विनियामक प्राधिकरणों में भी अपनी पहचान बनाई और उनमें से प्रत्येक पर अपनी गहरी छाप छोड़ी।

अपने लंबे एवं प्रतिष्ठित कैरियर में अलग अलग समय पर एम.वी. अरुणाचलम ने समूह की औद्योगिक गतिविधियों में आयाम स्थापित किए तथा इसके फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में इसके योगदान को बढ़ाया। उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों जैसे कि निदेशक-कार्बोरंडम यूनिवर्सल लिमिटेड, चेयरमैन-टीआई डायमंड चेन्स लिमिटेड, एमडी-टी.आई.आई, सीएमडी-टी.आई.आई, चेयरमैन-ई. आई.डी. पैरी इंडिया लिमिटेड, निदेशक-कोरोमंडल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड तथा सीईओ-मुरुगप्पा कंपनी आदि पर योगदान दिया।

भारत की दूसरी सबसे पुरानी कंपनी ई.आई.डी.पैरी (इंडिया) लिमिटेड की मजबूत वापसी और सफलता में उनका योगदान प्रसिद्ध है। मुरुगप्पा समूह ने 1981 में इस कंपनी का अधिगहण किया तथा एम.वी. अरुणाचलम को इसका चेयरमैन बनाया गया। तीन साल की संक्षिप्त अवधि में इस कंपनी को उन्होंने न सिर्फ व्यावसायिक स्थिरता प्रदान की बल्कि यह कंपनी डिविडेंट देने की स्थिति में आ गई। हाल ही में कंपनी ने भारतीय शक्कर (चीनी) उद्योग में अपने योगदान की 225वी वर्षगांठ मनाई।

एम.वी. अरुणाचलम ने पूरे औद्योगिक क्षेत्र की विभिन्न कंपनियों के बोर्ड में अपनी सेवाएं दी तथा उनके भविष्य के विकास के मार्ग पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। उद्योगों में मजबूत योगदान द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। सामुदायिक मंचों एवं औद्योगिक मंचों की कार्यवाहियों में एक सक्रिय भूमिका निभाते हुए वे 1964-65 में साउथ इंडिया चैम्बर आफ कामर्स के प्रमुख बने। इसी साल वे मद्रास मैनेजमेंट एसोसिएशन के भी प्रमुख थे। मद्रास उत्पादकता परिषद के प्रमुख के रूप में भी उन्होंने अपनी सेवाएं दी। चालीस साल की उम्र से पहले ही वे रोटरी क्लब, जिसके अंतर्गत तमिलनाडु, केरल एवं श्रीलंका आते थे, के गवर्नर बने।

धीरे-धीरे उनका योगदान राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा। 1970 के दशक के शुरुआत में इंटरनेशनल चैम्बर आफ कामर्स के भारतीय राष्ट्रीय समिति के वे अध्यक्ष बनें। इंटरनेशनल ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट पालिसी आयोग के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दी। यह पेरिस स्थित इंटरनेशनल चैम्बर आफ कामर्स का एक प्रमुख अग्रणी कमिशन है। एम.वी. अरुणाचलम 1995 में फेडरेशन आफ इंडिया चैम्बर आफ कामर्स एंडइंडस्ट्री (फिक्की) की समिति में शामिल हुए तथा उन्होंने 1976-77 में फिक्की के स्वर्ण जयंती सत्र की अध्यक्षता की।

वे 1969-70 की अवधि के दौरान नैवेली लिग्नाइट कार्पोरेशन के चेयरमैन रहे, 1971 से 1976 तक उन्होंने यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया के ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएं दी। वे मद्रास फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (1977-78) तथा तमिलनाडु इंडस्ट्रीयल इन्वेस्टमेंट कार्पोरेशन (1981-86) के चेयरमैन रहे। वे 1977 से 1994 तक रिजर्व बैंक आफ इंडिया के बोर्ड के सदस्य भी थे जो संभवतः 17 साल का रिकार्ड कार्यकाल था। 12 साल तक वे इंडस्ट्रीयल क्रेडिट एंड इन्वेस्टमेंट कार्पोरेशन आफ इंडिया (आईसीआईसीआई) के बोर्ड सदस्य भी रहें।

एम.वी. अरुणाचलम 1966 में शुरू की गई ज्वाइंट बिजनेस काउंसिल्स में सक्रिय थे। इसकी शुरुआत पहले भारत-जापान एवं जापान-भारत बिजनेस को-आपरेशन कमेटी के गठन स्वरूप एवं फिक्की तथा जापान चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स की भागीदारी से हुई थी। औद्योगिक गतिविधियों के विकास में उनके योगदान के लिए उन्हें 1996 में जापान के सम्राट द्वारा 'द आर्डर आफ द सैकरेड ट्रेजर', 'गोल्ड' तथा 'सिल्वर' स्टार से पुरस्कृत किया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अहम योगदान दिया। वे सेंट्रल इलेक्ट्रो केमिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट कारैकुडि (1970-72) के गवर्निंग काउंसिल के चेयरमैन, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद की शासी निकाय के सदस्य तथा अन्ना विश्वविद्यालय सिंडीकेट के सदस्य थे। वे ललित कला के प्रोत्साहन व संरक्षण में लगे एक अग्रणी संगठन 'कलाक्षेत्र' के कार्यकारी समिति के भी सदस्य थे। वे भारतीय विद्याभवन के मद्रास केंद्र के चेयरमैन भी थे।

एक महान ज्योति जो उद्योग, समुदाय और समाज के लिए बड़े पैमाने पर सतत ऊर्जा का स्रोत रही, 04 सितम्बर 1996 को क्षितिज में समा गयी। उद्योग, सरकार एवं समाज के समकालीन लोगों ने बड़ी संख्या में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यह उन सभी पर उनके महान प्रभाव का साक्ष्य है।

डाक विभाग एम.वी. अरुणाचलम पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाकटिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	605200
Stamps Printed	:	605200
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00